देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

भारत बना जी-20 का अध्यक्ष... 12

तिलहन व दलहन के उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 37
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
शुक्रवार | 17 नवम्बर, 2022

ऊसर भूमि में गेहूं की पैदावार के लिए एडवाइजरी जारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में बुधवार को मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ.अनिल सचान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की। डॉ.सचान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि लवणीय तथा छार से प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है तथा उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर लवण तथा छार से प्रभावित है। उन्होंने बताया कि कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ.देवेंद्र सिंह ने किसानों को बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें। डॉ.खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करने के बाद किसान बुवाई करे। उन्होंने किसानों को उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक करने की सलाह दी। ऊसर भूमियों के लिए गेहूं की प्रजातियां आर एल 210 एवं केआरएल 213 सर्वोत्तम है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः13 | अंकः268 | देहरादून, बुधवार, 16 नवंबर, 2022 | पृष्ठः08

ऊसर भूमी पर गेहूं की उत्पादन तकनीक की दी जानकारी

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अनिल सचान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर कृषकों हेतु एडवाइजरी जारी की डॉ सचान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि लवणीय तथा छार से प्रभावित है जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर लवण तथा छार से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज, मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार

से प्रभावित है उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ देवेंद्र सिंह ने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े–बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है अतः संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान भाई बुवाई करें डॉक्टर खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वह उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है डॉक्टर खान ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें उसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई उसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

ऊसर भूमि में गेहूं की उत्पादन की आधुनिक तकनीक पर कृषकों जारी की एडवाइजरी

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ अनिल सचान ने ऊसर भूमि में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक पर कृषको हेतु एडवाइजरी जारी की। डॉ सचान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि लवणीय तथा छार से प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर लवण तथा छार से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है।

उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ देवेंद्र सिंह ने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें।

मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। अत: संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान भाई बुवाई करें। डॉक्टर खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वह उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें। बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है । डॉक्टर खान ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। उसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई उसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

ऊसर भूमियों में गेहूं की उत्पादन तकनीकः डॉ अनिल सचान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल सचान ने ऊसर भूमियों में गेहूं उत्पादन की आधुनिक तकनीक विषय पर कृषकों हेतु एडवाइजरी जारी की। डॉ सचान ने बताया कि भारत में लगभग 6.73 मिलियन हेक्टेयर भूमि लवणीय तथा छार से प्रभावित है। जिसमें 3.77 मिलियन हेक्टेयर छारीय और 2.96 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय है। उत्तर प्रदेश में 13.69 लाख हेक्टेयर लवण तथा छार से प्रभावित है जिसमें मुख्य रूप से कानपुर नगर, कानपुर देहात, कन्नौज, इटावा, औरैया, उन्नाव, फर्रुखाबाद, कन्नौज,मैनपुरी सहित कई जनपद लवण तथा छार से प्रभावित है। उन्होंने बताया कि इन भूमियों में लवण सहनशील गेहूं की प्रजातियां एवं नवीनतम तकनीकों के संयोजन से उत्पादन में वृद्धि कर खाद्य सुरक्षा को सतत रूप से स्थाई करने में महत्वपूर्ण योगदान होगा। विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ देवेंद्र सिंह ने बताया कि उसर भूमि में हमेशा उचित नमी पर ही जुताई करें तथा बड़े-बड़े ढेलों को भुरभुरा कर दें तथा मृदा परीक्षण की संस्तुति के आधार पर 200 किलोग्राम जिप्सम प्रति हेक्टेयर अवश्य प्रयोग करें। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि ऊसर भूमियों में बीज का जमाव कम होता है। अतः संस्तुति मात्रा से सवा गुना ज्यादा अर्थात 115 से 120 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की दर से अवश्य प्रयोग करना चाहिए। बीज का शोधन कार्बेंडाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधन करने के बाद किसान भाई बुवाई करें। डॉक्टर खान ने किसान भाइयों को सलाह दी है कि वह उसर भूमियों में गेहूं की बुवाई 20 नवंबर तक अवश्य कर दें। बुवाई के दिनों में औसत तापमान 20 डिग्री सेल्सियस उत्तम होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि बीज 5 सेंटीमीटर से अधिक गहराई पर न डालें। उसर भूमियों हेतु गेहूं की प्रजातियां की आर एल 210 एवं के आर एल 213 सर्वोत्तम है। उन्होंने बताया कि इन प्रजातियों का चयन कर किसान भाई उसर भूमियों में बुवाई कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।